ISSN(Online): 2320-9801
ISSN (Print) : 2320-9798

International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal) | Impact Factor: 6.577 |

Website: www.ijircce.com

Vol. 5, Issue 12, December 2017

भारत-नेपाल सम्बन्ध (वर्ष 1950 से वर्तमान तक): एक सामान्य अवलोकन

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College, Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

शोध आलेख का सार: भारत और नेपाल के सम्बन्धों का एक सामान्य अवलोकन न केवल दोनों राष्ट्रों के बदलते हुए राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य के अध्ययन के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हो गया है, बल्कि दक्षिण एशियाई राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण हो गया है। भारत तथा चीन के बीच नेपाल एक 'बफर स्टेट' है, इसलिए भू राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भी भारत नेपाल के सम्बन्धों का सामान्य अवलोकन और विश्लेषण महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। भारत और नेपाल के बीच का सम्बन्ध इतिहास, संस्कृति व भूगोल से प्रभावित एवं परिवर्तित होता रहा है। प्रस्तुत आलेख में भारत-नेपाल के बीच के सम्बन्धों को वर्ष 1950 से लेकर वर्तमान तक अर्थात् जून, 2014 तक का अवलोकन अपेक्षित है। इन काल अवधि में दोनों देशों के सम्बन्धों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज नेपाल का झुकाव चीन की ओर दिख रहा है। दूसरी ओर भारत तथा चीन के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। इसलिए भारत-नेपाल के सम्बन्धों के स्वरूप, उद्देश्य, राजनीति और कूटनीति का अवलोकन व विश्लेषण अनिवार्य प्रतीत होता है।

मूल शब्दः राजतंत्र, प्रजातंत्र, सांस्कृतिक आयाम, बफर स्टेट, कूटनीति, वैदेशिक नीति एवं भू राजनीति।

प्रस्तावना

भारत और नेपाल के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों के इतिहास की जानकारी छठी शताब्दी ईसा पूर्व से प्रमाणित रूप में मिलती है। मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अंगीकार कर अपने पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को विदेशों में इस धर्म के प्रचार-प्रसार का दायित्व सौंपा। सम्राट अशोक ने स्वयं कपलिवस्तु की यात्रा की और वहाँ अपना धर्म लेख स्थापित किया, फलतः भारत के नेपाल के साथ सम्बन्ध और अधिक घनिष्ट हुए। मौर्य काल के पश्चात् गुप्तकाल में दोनों देशों के राजनीतिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों में घनिष्टता और बढ़ी।' यद्यपि यह विवादास्पद है कि नेपाल हर्षवर्धन के साम्राज्य का अंग था अथवा नहीं, किन्तु हर्ष युग में उन देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध अक्षुण्य बने रहे। 14वीं शताब्दी तक नेपाल में अनेक राजवंशों का शासन चलता था, जिनमें से काठमाण्डु घाटी का राजवंश सबसे महत्वपूर्ण था। सन् 1457 ई० में राजा यक्षमल्ल ने अपने राज्य को मटगाँव, काठमाण्डू और पाटन नाम के तीन राज्यों में विभाजित कर नेपाल के शासकों को कमजोर बना दिया। इसके बाद तीन शताब्दियों तक नेपाल में किसी शक्तिशाली शासन की स्थापना न हो सकी। इसी काल में उत्तर भारत के कुछ मुस्लिम शासकों ने नेपाल पर आक्रमण भी किए और वहाँ के शासकों की सम्पत्तियाँ लूट लीं। 18वीं शताब्दी में नेपाल में सर्वप्रथम शक्तिशाली राजतांत्रिक व्यवस्था की नींव पड़ी। राजतंत्रात्मक व्यवस्था की

स्थापना से लेकर पंचायती राजतंत्र की स्थापना तक भारत-नेपाल सम्बन्धों में एक नये युग का आरम्भ हुआ। नेपाली प्रशासन इस तथ्य से भलीभाँति परिचित था कि नेपाल के स्वतन्त्र अस्तित्व और उसकी आर्थिक प्रगति के लिए राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भारतीय सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। उन्हें यह भी आभास हो रहा था कि भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में ब्रिटिश सत्ता को समाप्त करने के लिए अनेक नेपाली नेताओं ने सक्रिय भाग लेकर भारत के नेताओं की काफी मदद की थी और इसी परिप्रेक्ष्य में भारत के राष्ट्रीय नेताओं की सहायता से भारत में ही नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ था। अतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और नेपाली कांग्रेस के नेता मिलकर आन्दोलन चला सकते थे। नेपाली कांग्रेस द्वारा वहाँ के राणा प्रशासन के विरुद्ध संचालित प्रत्येक आन्दोलन में भारतीय नेताओं, विशेषतः आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा राम मनोहर लोहिया ने हमेशा मदद की।

भारत और नेपाल के बीच सम्बन्धों को यथास्थिति में रखने का सन् 1947 ई० में एक समझौता हुआ जिसमें भारत को ब्रिटिश शासन के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता प्राप्त हुई तो दूसरी ओर नेपाल के साथ भारत के स्वतन्त्रता पूर्व के सम्बन्धों को स्वीकार कर लिया गया। भारत और नेपाल के मध्य 1947 ई० में सम्पन्न यथास्थिति का समझौता एक अस्थायी व्यवस्था थी। दिसम्बर, 1947 ई० तक

ISSN(Online): 2320-9801
ISSN (Print) : 2320-9798

International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal) | Impact Factor: 6.577 |

Website: www.ijircce.com

Vol. 5, Issue 12, December 2017

भारत का नेपाल में कोई राजदूत भी नहीं था और ब्रिटिश राजदूत ही भारतीय हितों के लिए कार्य करता था। सन् 1948 में चीन में साम्यवाद के उदय के कारण भारत की उत्तरी सीमाओं के लिए असुरक्षा की स्थिति पैदा हो गई थी। ऐसी परिस्थिति में दोनों देशों के मध्य न तो हिमालय क्षेत्र में चीन को रोकने हेतु कोई सन्धि हो सकी और न ही नेपाल में कोई प्रशासनिक सुधार लागू हो सके। फिर भी 31 जुलाई, 1950 ई० को दोनों देशों ने मिलकर दो पृथक् सन्धियों पर हस्ताक्षर किए। इन दोनों सन्धियों में प्रथम सन्धि शान्ति एवं मित्रता के लिए हुई थी और दूसरी व्यापार, वाणिज्य तथा पारगमन की सन्धि पर हस्ताक्षर हुए थे। यह दोनों सन्धियाँ भारत और नेपाल के पारस्परिक वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण साबित हुई।

भारतीय प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू ने जून, 1951 ई० में अपनी नेपाल यात्रा के दौरान नेपाल को तकनीकी और अनेक क्षेत्रों में सहायता उपलब्ध कराने का प्रस्ताव किया तो तत्कालीन नेपाली सरकार अपने अन्तविरोधों के कारण वह सहायता प्राप्त न कर सकी। हालाँकि पंडित नेहरू ने यह स्पष्ट किया था कि उनका उद्देश्य नेपाल के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप करना नहीं है। वे केवल नेपाल का विकास चाहते हैं। इसी प्रकार नेपाल तथा उत्तरी बिहार के लिए अभिशाप कोसी नदी के जल को नियंत्रित करने तथा उसकी शक्ति को कृषि और विद्युत के क्षेत्र में प्रयोग करने के लिए 25 अप्रैल, 1954 को भारत और नेपाल के बीच एक समझौता सम्पन्न हुआ।
भारत ने सन् 1954 ई० में तिब्बत पर चीनी प्रभुता स्वीकार की और उसके कुछ ही समय बाद नेपाल ने भी तिब्बत को चीन का एक अंग मान लिया था लेकिन दोनों ही राष्ट्र चीन की इस विस्तारवादी नीति से सशंकित थे; और इसी कारण नेपाली प्रधानमंत्री श्री वी०पी० कोईराला 17 जून, 1960 को भारत की यात्रा पर पधारे। उन्होंने दोनों देशों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आधार पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को स्वीकार किया। भारत ने भी प्रति उत्तर में यह कहा कि भारत और नेपाल दोनों अभिन्न मित्र राष्ट्र है और भारत सदैव नेपाल की जय पराजय में भागीदार रहेगा। भारत ने नेपाल की आर्थिक प्रगति के लिए 18 करोड रु० की सहायता भी प्रदान की और उसके कुछ ही समय बाद भारत और नेपाल के बीच 1। सितम्बर, 1960 को संशोधित व्यापार और पारगमन की सन्धि हस्ताक्षरित हुई। 29 सितम्बर, 1962 को रक्सौल (बिहार) में गोली चलने को घटना से भारत नेपाल सम्बन्ध कटुता की चरम सीमा पर जा पहुँचे। इस घटना में नेपाल के असिस्टेंट सब इन्सपेक्टर तथा दो सिपाहियों ने भीड़ भरे बाजार में भारतीय नागरिकों तथा एक भारतीय असिस्टेंट सब इन्सपेक्टर तथा तीन सिपाहियों को गोलियाँ चलाकर घायल कर दिया। इस घटना से रक्सौल से नेपाल जाने वाला भारत-नेपाल मार्ग अवरूद्ध हो गया। भारतीय व्यापारियों ने नेपाल में अपना माल भेजना बन्द कर दिया और इस प्रकार दोनों राष्ट्रों के नेतागण एक दूसरे के विरुद्ध आरोप-प्रत्यारोप लगाने लगे।

भारत-नेपाल सम्बन्धों की अगली कड़ी में नेपाल नरेश महेन्द्र 25 नवम्बर से 20 दिसम्बर, 1965 तक की 25 दिवसीय राजकीय यात्रा पर भारत पधारे। उनका पूरे भारत में भरपूर स्वागत हुआ।" श्रीमती गाँधी ने 4-7 अक्टूबर, 1966 तक नेपाल की शासकीय यात्रा की। श्रीमती गाँधी के प्रथम शासनकाल (वर्ष 1966-77) में भारत-नेपाल सम्बन्धों में घनिष्ठता बढ़ी रही। दोनों ओर से शासकीय और राजकीय यात्राएँ भी होती रहीं। वर्ष 1977 के बाद भारत तथा नेपाल के बीच का सम्बन्ध व्यापक राजनीतिक, कूटनीतिक एवं सामरिक महत्व रखता है। वर्ष 1970 में आपातकाल के बाद भारत में जनता पार्टी की सरकार की स्थापना के चाद भारत तथा नेपाल के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पुरजोर कोशिश किया गया। मार्च, 1978 में दोनों देशों के बीच दो महत्वपूर्ण सन्धियाँ हुई, जिसके माध्यम से विनिर्मित लगभग 60 वस्तुओं पर से तटकर हटा लिया गया। इतना ही नहीं, भारत ने नेपाल को 16 आवश्यक वस्तुएँ देते रहने का दायित्व लिया। भारत के द्वारा नेपाल को अनेक परियोजनाओं में मदद प्रदान की गई, जिसमें देवीघाट, त्रिशुल, कर्नाली, पंचेश्वर जल विद्युत योजनाएँ चक्र नहर परियोजना, कोशी और गंडक परियोजना आदि प्रमुख हैं।

1985 ई० में नेपाल नरेश ने भारत की यात्रा किया तथा दोनों देशों के बीच पारगमन सन्धि को 1989 तक बढ़ा दिया। वर्ष 1980-1988 तक भारत तथा नेपाल के बीच लगभग सामान्य सम्बन्ध रहा। 1989 में जब भारत-नेपाल के बीच व्यापार तथा पारगमन सन्धि पुनः आगे नहीं बढ़ाया गया, तो दोनों देशों के बीच का मधुर सम्बन्ध नकारात्मक रूप में प्रभावी होने लगा। भारत उसके बाद भी नेपाल से बेहतर सम्बन्ध बनाने का प्रयास करता रहा, लेकिन नेपाल ने भारत की जानकारी के बिना चीन से हथियार खरीद लिया, इससे भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक था। अप्रैल-मई, 1991 ई० में नेपाल की राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुआ तथा परिवर्तन में लोकतांत्रिक मान्यताओं पर अधिक बल दिया गया। भारत ने नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था का समर्थन किया तथा उसे सहयोग करने की बात भी कहा।

ISSN(Online): 2320-9801
ISSN (Print) : 2320-9798

International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal) | Impact Factor: 6.577 |

Website: www.ijircce.com

Vol. 5, Issue 12, December 2017

5-10 दिसम्बर, 1991 तक नेपाली प्रधानमंत्री गिरजा प्रसाद कोईराला ने भारत की यात्रा किया। कोईराला की भारत यात्रा से दोनों देशों के सम्बन्धों को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण आधार मिला। कोईराला ने नई दिल्ली में यह वादा किया कि भारत तथा नेपाल, व्यापार, पारगमन, ग्रामीण विकास, ग्रामीण रोजगार तथा कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग हेतु समझौता करेंगे। अप्रैल, 1993 में नई व्यापार व्यवस्था के अन्तर्गत नेपाली वस्तुओं को बिना सीमा शुल्क के भारत में प्रवेश कराने की बात की गई तथा द्विपक्षीय व्यापार समझौता को आगे बढ़ाने पर भी विश्वास जता गया। भारतीय उपराष्ट्रपति के०आर० नारायणन के निमंत्रण पर नेपाल के युवराज दिपेन्द्र वीर विक्रम साहदेव ने 1994 ई० में अपनी पहली सरकारी यात्रा भारत के लिए किया। 7 फरवरी, 1995 को नेपाली प्रधानमंत्री श्री माधव कुमार ने भारत की पाँच दिवसीय यात्रा की।" इस यात्रा के दौरान 1950 ई० में की गई भारत नेपाल सन्धि में संशोधन करने की माँग की गई।

12 फरवरी, 1996 से 17 फरवरी, 1996 तक नेपाली प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा ने भारत की यात्रा किया, जिस दौरान महाकाली बेसिन परियोजना, टनकपुर बाँध से नेपाल की बिजली और पानी देने सम्बन्धी प्रस्ताव पर भारत ने सहमति प्रदान कर दिया। भारतीय प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ 5-7 फरवरी, 1997 को नेपाल की यात्रा पर रहे। इस दौरान दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता हुआ तथा नागरिक उड्डयन के क्षेत्र में भी एक सहमति पर हस्ताक्षर हुआ। गुजराल की नेपाल यात्रा से नेपाल की एक बड़ी उपलब्धि यह रही की, उसने बांग्लादेश से अपने देश में जाने के लिए 61 किमी० के पारगमन मार्ग की अनुमति भारत से प्राप्त कर लिया। मई, 1998 ई० में के० आर० नारायणन ने राष्ट्रपति के रूप में तीन दिवसीय यात्रा पर नेपाल गए। दूसरी आरे 26 जनवरी, 1999 को नेपाली महाराजाधिराज ने भारतीय गणतन्त्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि की कुर्सी पर विराजमान हुए।"

स्पष्टतः वर्ष 1980 से लेकर 2000 ई० तक का भारत-नेपाल सम्बन्ध सामान्य और मधुर ही रहा। भारतीय विदेश मंत्री यशवंत सिंह ने अगस्त, 2001 में नेपाल की सद्भावना यात्रा किया तथा द्विपक्षीय व्यापार सम्बन्धी समझौते पर अधिकाधिक जोर दिया। मार्च, 2001 ई० में नेपाल के प्रधानमंत्री शेरबहादुर देउबा ने भारत की यात्रा की, जिसमें व्यापार में पारगमन सन्धि पर हस्ताक्षर करके उसे 7 मार्च, 2007 के लिए प्रभावी बनाया गया अर्थात् नवीनीकरण की गई।" भारत तथा नेपाल के बीच व्यापार और पारगमन सन्धि को पुनः सात वर्ष की अवधि के लिए स्वतः नवीनीकरण पर दोनों देशों ने सहमति व्यक्त किया।।

फरवरी, 2005 को नेपाल में राजशाही के द्वारा शेरबहादुर देउबा की सरकार को बर्खास्त कर दिया गया, जिससे वहाँ राजनीतिक संकट उत्पन्न हो गया। नेपाल में इस आपातकाल के माध्यम से संचार माध्यमों पर कठोर नियंत्रण लगा दिया गया, हालाँकि अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में 7 फरवरी, 2005 तक देश का विदेश से संचार आआंशिक रूप में बहाल कर दी गई। नेपाल में आपातकाल की समाप्ति तथा लोकतांत्रिक की बहाली के लिए बढ़ते हुए अन्तर्राष्ट्रीय दबाव को देखकर नेपाली महाराज ज्ञानेन्द्र ने 21 अप्रैल, 2006 को राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में जनता को सत्ता सौंपने की घोषणा किया। तथा आम चुनाव कराने की बात कही। यह उल्लेखनीय है कि लोकतंत्र की बहाली के लिए भारतीय प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने अप्रैल, 2006 में कर्ण सिंह को विशेष शांतिदूत बना कर नेपाल भेजा था। 25 अप्रैल, 2006 को नेपाल में संसद की बहाली की गई तथा 30 अप्रैल, 2006 को गिरिजा प्रसाद कोईराला ने प्रधानमंत्री पद की शपथ लिया।"

इसके साथ ही नेपाल में लोकतंत्र स्थापित हुआ। जून, 2006 में माओवादी गुट भी नेपाल की राजनीतिक व्यवस्था का अंग बन गया तथा नेपाली विधायिका ने एक संविधान बनाने की बात कही, जिसमें लोकतात्रिक मान्यताओं को अधिकाधिक महत्व प्रदान किया जाएगा। माओवादियों ने तो राजा के पद को समाप्त करने की बात कही है। नेपाली सत्ता पर माओवाद का बढ़ते हुए बर्चस्व को देखकर भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक है, क्योंकि भारतीय राज्य बिहार में नक्सलवादी और माओवादी गतिविधियाँ इससे अत्यधिक उत्साहित हो सकती है। नेपाली राजनीतिक व्यवस्था में मधेशियों (वैसे नेपाली लोग, जो भारतीय मूल के है) की अल्प भूमिका को लेकर फरवरी, 2007 के शुरू में टकराव उपस्थित हो गई।

7 फरवरी, 2007 को तो पुलिस फायरिंग में लगभग दर्जन भर मधेशी मारे गए।" नेपाल सरकार के द्वारा मधेशी समाज के खिलाफ की जा रही कार्यवाही के कारण लगभग दस हजार मधेशी भारत में प्रवेश कर गए। इससे भारत सरकार का नाखुश होना स्वाभाविक था। भारत सरकार ने नेपाल सरकार को शांतिपूर्ण ढंग से मधेशी समस्या की समाधान की बात कहीं, तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी मधेशियों

ISSN(Online): 2320-9801
ISSN (Print) : 2320-9798

International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal) | Impact Factor: 6.577 |

Website: www.ijircce.com

Vol. 5, Issue 12, December 2017

पर हो रहे नेपाली पुलिस के दमन पर नाराजगी व्यक्त किया। पुनः एक बार अन्तर्राष्ट्रीय दबाव और भारत की नराजगी को देखते हुए नेपाली प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में संविधान में संशोधन करने का फैसला किया तथा मधेशियों का समान अधिकार देने की बात कही। इसके बाद भी स्वदेशों के बीच सामान्य स्थिति रही। स्पष्टतः वर्ष 2000 से लेकर वर्ष 2014 तक भारत-नेपाल का सम्बन्ध लगभग सामान्य और मधुर ही कहा जाएगा।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में वर्ष 2014 में सरकार गठित हुई। मोदी ने भी गुजराल डॉक्टरीन, 1997 तथा पड़ोसी नीति, 2005 को महत्वपूर्ण मानते हुए अपने पड़ोसी देशों को महत्व प्रदान किया है। मोदी के लिए भारत की पड़ोसी नीति में नेपाल और भूटान का सबसे अधिक महत्व रहा है। नरेन्द्र मोदी ने तो 'नेबरहुड फर्स्ट' की नीति को महत्व दिया है। प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र मोदी की पहली नेपाल यात्रा 3-4 अगस्त, 2014 को सम्पन्न हुई, जिसमें दोनों देशों के बीच अधिक मधूर सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया गया।

I.अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भारत नेपाल सम्बन्ध को वर्ष 1950 से लेकर वर्तमान तक का सामान्य अवलोकन है। इस आलेख का उद्देश्य भारत और नेपाल के सम्बन्ध में किसी दूसरी शक्ति यानी चीन की राजनीति व कूटनीति को भी स्पष्ट करना है। इस आलेख के माध्यम से नेपाल की 'बफर स्टेट' के रूप में भूमिका की सार्थकता का अवलोकन भी अपेक्षित है। भारत नेपाल विषय पर शोध आलेख का लेखन शैक्षणिक दृष्टिकोण से तो महत्वपूर्ण है ही, राजनीतिक, सामरिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इस विषय पर शोध आलेख के लेखन से भारत-नेपाल सम्बन्धों में मतभेद के वास्तविक बिन्दू को ढूँढ़ा जा सकता है; इनके सन्दर्भ में दोनों देशों के बीच बेहतर सम्बन्ध कायम करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया गया है। स्पष्टतः प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य व औचित्य स्पष्ट है।

II. परिकल्पना

प्रस्तुत शोध आलेख का शीर्षक "भारत-नेपाल सम्बन्ध (वर्ष 1950 से वर्तमान तक): एक सामान्य अवलोकन" है। इस शोध आलेख की परिकल्पना निम्नलिखित रूप में अपेक्षित है:
1. भारत की विदेश नीति में पड़ोसी राष्ट्रों का हमेशा ही महत्व रहा है तथा नरेन्द्र मोदी सरकार भी पूर्व की भाँति भविष्य में भी नेपाल को महत्व प्रदान करती रहेंगी।
2. नेपाल की विदेश नीति चीन के प्रभाव में भी प्रभावित होती रही है, वर्तमान में भी चीन की सरकार और विचारधारा के प्रभाव में नेपाल का दृष्टिकोण भारत से विपरीत दिखता है, परन्तु अन्ततः नेपाल का झुकाव भारत की ओर ही होगा।
3. शोध आलेख के माध्यम से भारत-नेपाल सम्बन्धों के मतभेद के वास्तविक बिन्दु को रेखांकित करना अपेक्षित है।

III. साहित्य सर्वेक्षण

भारत नेपाल सम्बन्ध पर अबतक कई महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं। इस विषय पर प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोत उपलब्ध है। साहित्य सर्वेक्षण के अन्तर्गत हमने द्वितीय एवं सहायक स्रोतों को अध्ययन का प्रमुख आधार बनाया है। साहित्य सर्वेक्षण की अनिवार्यता को देखते हुए हमने अपने प्रस्तुत शोध आलेख की तैयारी के निम्नलिखित प्रमुख पुस्तकों का अध्ययन किया है:
1. वी०एन० खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, तृतीय संशोधित संस्करण, निकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा० लि०,नई दिल्ली, 2004
2. प्रो० बी०एम० जैन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2003
3. डॉ० एस०पी० सिंहल, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2014
4. डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा एवं शशी के० जैन, राजनय के सिद्धान्त, कॉलेज बुक्र डिपो, जयपुर, 2006
5. भोला चटर्जी, ए स्टडी ऑफ रिसेन्ट नेपालीज पॉलिटिक्स, द वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967
6. लियो ई० रोज, नेपाल स्ट्रैटजी फॉर सरवाइवल, आक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई, 1991

ISSN(Online): 2320-9801
ISSN (Print) : 2320-9798

International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal) | Impact Factor: 6.577 |

Website: www.ijircce.com

Vol. 5, Issue 12, December 2017

IV. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख के लेखन में ऐतिहासिक एवं वस्तु-विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लिया गया है। शोध आलेख की तैयारी में पूर्व का साहित्य सर्वेक्षण का अवलोकन किया गया है, जिसके सन्दर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि इसमें तुलनात्मक पद्धति का भी आशिक प्रयोग किया गया है।

V. निष्कर्ष

अब तक के विवेचन से स्पष्ट है कि भारत-नेपाल सम्बन्ध वर्ष 1950 से वर्तमान तक परिवर्तित होता रहा है। चीन के हस्तक्षेप के कारण कभी कभी भारत नेपाल सम्बन्ध विपरीत रूप में प्रभावित हुआ है। अभी हाल में भारत नेपाल के बीच तनाव की स्थिति कायम है। इसके पीछे चीन की कूटनीति तथा वाम नास्तिकतावाद की भूमिका है। भारत ही नहीं, नेपाल के हित में है कि दोनों एक दूसरे से बेहतर सम्बन्ध रखें। प्रस्तुत शोध आलेख को वांछनीयता, उपादेयता एवं सार्थकता बिल्कुल स्पष्ट है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. डी०आर० रेगमी, एनसियट एण्ड मेडाइवल नेपाल, पृष्ठ-107
2. डी०आर० रेगमी, मॉडर्न नेपाल, राइज एण्ड ग्रोथ एण्ड एटीन्थ सेंचुरी, पृष्ठ-9
3. द टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक समाचार, नई दिल्ली, 20 फरवरी, 2012
4. डॉ० के०के० शर्मा, भारत-नेपाल सम्बन्ध एक राजनीतिक अध्ययन, 1988
5. एशियन रिकॉर्डर वाल्यूम 4. नं०-7, फरवरी, 1960, पृष्ठ 3157
6. शाही घोषणा (द रॉयल प्रोलैमेशन), 15 दिसम्बर, 1960, काठमाण्डू, 1961, पृष्ठ-8
7. द हिन्दुस्तान टाइम्स, 10 अक्टूबर, 1962
8. नारायण अग्रवाल, इंडिया एण्ड नेपाल, एन एक्सरसाइज ऑफ ओपेन डिप्लोमेसी, पृष्ठ 100-101
9. संयुक्त विज्ञप्ति, 7 अक्टूबर, 1966 भसीन, पृष्ठ-111
10. बी० एल० फड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्यभवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ-302
11. तथैव, पृष्ठ 303
12. तथैव, पृष्ठ-303
13. 27 जनवरी, 1999, हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र, पटना
14. 8 मार्च, 2007, हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र, पटना
15. द हिन्दू, 22 अप्रैल, 2006, नई दिल्ली
16. द हिन्दू, 2 मई, 2006
17. हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्र, पटना, 8 फरवरी, 2007
18. दैनिक समाचार, हिन्दुस्तान, 5 अगस्त, 2014, पटना।